रसाभास तथा भावाभास

Prof. Brijesh Kumar Shukla

रसों का अनुचित रूपेण प्रतिपादन रसाभास कहा जाता है।[१] अनौचित्य शास्त्र तथा लोक में गर्हित विषयों का वर्णन है। यथा-एक नायिका का अनेक नायकों के साथ सम्भोग वर्णन, उपपति के साथ शृङ्गारवर्णन, पूज्य गुरु तथा मुनि की पत्नी के प्रति रति तथा पशुपक्षिविषयक रति भी रसाभास है। रस तथा रसाभास में चर्वणा एक जैसी होती है। परन्तु इस सन्दर्भ में सहृदय ही प्रमाण हैं। एक नायिका की अनेक नायक विषयक रति रसाभास है। एक नायक की अनेक नायिकाओं के साथ रति आभास नहीं है। इसीलिए सम्पूर्ण नायकों में उत्तम भगवान् श्रीकृष्ण की बहु गोपी विषयक रति को रसाभास नहीं मानते हैं ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। इससे व्यतिरिक्त स्थल पर आभासता कुछ आचार्यों द्वारा स्वीकार की गयी है-

यत्र द्वयोर्मध्ये एकस्या एवैकस्यैव वा रतिश्चेदेकस्या अनेकविषया रतिश्च रसाभासः। एकस्याऽनेकविषया रतिश्च नाभासः। अतएव सकलनायकोत्तमतमस्य श्रीकृष्णस्य बहुविषयरतेर्नाभसतेत्येके। तद् व्यतिरिक्तस्थले आभासत्वमेवेत्यपरे।[४]

अलङ्कारसार में रसाभास के उदाहरण दिये गये हैं। विस्तृत वर्णन की अपेक्षा नहीं है। भावाभास भी भावों के अनौचित्य प्रवर्तन से निष्पन्न होता है।[५] आचार्य मम्मट भी रसाभास तथा भावाभास की परिभाषा इसी प्रकार प्रस्तुत करते हैं- **तदाभासा अनौचित्यप्रवर्त्तिताः**।[६] श्रीबालकृष्ण भट्ट ने रसाभास तथा भावाभास के मम्मटप्रोक्त उदाहरणों को ही प्रस्तुत किया है।[७] पण्डितराजोत्तर आधुनिक आचार्य भी रसाभास तथा भावाभास के विषय में कुछ अधिक नवीनता नहीं दिखलाते हैं।[८]

---

१. अलङ्कारसार, ४/६४

२. अलङ्कारसार, ४/६३, ४/६५

३. काव्यप्रकाश, पृ० १७१

४. अलङ्कारसार, चतुर्थ अध्याय, पृ० ३५

५. अनौचित्यात्प्रवर्तितो भावस्तदाभासः। (अलङ्कारसार, चतुर्थोल्लास, पृ० ३५)

६. काव्यप्रकाश, चतुर्थोल्लास, पृ० १७१

७. अलङ्कारसार ४/६८,६९

८. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र, पृ० १६२-१६३

ने रसों के उदय, शान्ति, सन्धि तथा शबलत्व का निषेध करते हुए कहा है कि जब स्थायिभाव विभावादि से संवलित हो जाता है तो रस की अनुभूति होने लगती है। ऐसी स्थिति में अन्य विषयों का ज्ञान कैसे सम्भव है? अतः रसशान्ति, रसोदय, रससन्धि तथा रसशबलता नहीं हो सकती है।[१] भाव के साथ इनका सम्बन्ध हो सकता है।[२] अतः भावशान्ति आदि को स्वीकार करना चाहिए रसशान्त्यादि को नहीं। इस प्रकार रस ध्वनि तथा भावध्वनि के अनेक भेद होने पर भी रसादिध्वनि को काव्यशास्त्रियों ने एक भेद ही अङ्गीकार किया है। यदि इन सब के भेदोपभेद किये जायेंगे तो निश्चप्रच रसादि ध्वनि के अनन्त भेद हो जायेंगे।[३] अतः रसादि ध्वनि का एक भेद स्वीकार करना ही श्रेयस्कर है।

(ख) लक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य : घण्टा वादन के अनन्तर जो अनुरणन रूप प्रतिध्वनि होती है, इसमें घण्टे का शब्द और अनुरणन का क्रम जैसे स्पष्टतया संलक्षित होता है वैसे ही जहाँ वाच्य और व्यङ्ग्य के स्पष्ट क्रम का पूर्वापर ज्ञान हो तो वहाँ संलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य ध्वनि होती है-

घण्टावादनानन्तरमनुस्वानस्येव संलक्ष्यः क्रमो यस्य व्यङ्ग्यस्य तादृशं व्यङ्ग्यं यत्र स संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यो ध्वनिः।[४]

आचार्य मम्मट ने संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य के विषय में कहा है कि अनुस्वान के सदृश संलक्ष्य क्रम व्यङ्ग्य नामक जो ध्वनि है वह शब्दशक्त्युत्थ, अर्थशक्त्युत्थ तथा उभयशक्त्युत्थ भेद से तीन प्रकार की कही गयी है।[५]

अलङ्कारसार में भी इस ध्वनि के तीन भेद बतलाये गये हैं-

(१) शब्दशक्तिमूलानुरणनरूपव्यङ्ग्य।

(२) अर्थशक्तिमूलानुरणनरूपव्यङ्ग्य।

(३) उभयशक्तिमूलानुरणनरूपव्यङ्ग्य।[६]

---

१. रसस्य हि न शान्त्युदयौ सम्भवतः तस्य नित्यत्वेन वक्ष्यमाणत्वात्, नापि सन्धिशबलते सम्भवतः, स्थायिभावस्य विभावाद्यसंवलने रसतयानभिव्यक्तेस्तत्संवलने तु रसतात्पर्यावसानेन विगलितवेद्यान्तरत्वात्। (काव्यदर्पण, पृ० १३७)

२. काव्यदर्पण, पृ० १३७

३. अलङ्कारसार, चतुर्थोल्लास, पृ० ३६

४. अलङ्कारसार, चतुर्थोल्लास, पृ० ३६-३७

५. अनुस्वानाभसंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यस्थितिस्तु सः।
शब्दार्थोभयशक्त्युत्थत्रिधा स कथितो ध्वनिः॥ (काव्यप्रकाश ४/३७-३८)

६. शब्दशक्तिमूलानुरणनरूपव्यङ्ग्यार्थशक्तिमूलानुरणनरूपव्यङ्ग्योभयशक्तिमूलानुरणनरूपव्यङ्ग्यभेदात्।

भावशान्ति, भावोदय, भावसन्धि तथा भावशबलता

Prof. Brijesh Kumar Shukla

व्यभिचारी भावों की अभिव्यञ्जित चार अवस्थाएं भावशान्ति, भावोदय, भावसन्धि तथा भावशबलता को उत्पन्न करती हैं। यदि किसी भाव के चमत्कार पूर्ण उपशमन का वर्णन किया जाता है तो वहाँ भावशान्ति समझना चाहिए। भाव की उत्पत्ति होकर पुनः शमन हो जाता है। रसदीर्घिका में कहा गया है-

अनुत्पन्नस्याथ भावस्य प्रशमः सुखतो भवेत्।
केनचिद् हेतुना कस्माद् भावशान्तिस्तु सा मता।।[१]

अलङ्कारसार में भावशान्ति का वही उदाहरण प्रस्तुत किया गया है जो आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में समुद्धृत किया है।[२] किसी अनुत्पन्न भाव का अकस्मात् उत्पन्न हो जाने का काव्यात्मक वर्णन भावोदय होता है-

अनुत्पन्नस्य चाकस्मादुत्पत्तिरुदयो मतः।[३]

श्रीबालकृष्णभट्ट ने भावोदय का उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह उदाहरण भी काव्यप्रकाश से गृहीत है।[४] यदि एक साथ दो भाव समाविष्ट हों तो वहाँ भावसन्धि की स्थिति हो सकती है।[५] यहाँ समानाधिकरणक भावों को भावसन्धि के रूप में प्रस्तुत करने पर कहीं-कहीं चमत्कार का अभाव रहेगा। अतः परस्पर पराभव करने में समर्थ दो भावों का समानाधिकरण स्वीकर करने पर भावसन्धि में चमत्कार होगा। भावसन्धि में भाव परस्पर अभिभूत करने वाले होने पर भी एक दूसरे को पराभूत नहीं करते हैं। अतः यही वैलक्षण्य काव्य में चमत्कार का आधान करता है। साहित्यसार में इस तथ्य का स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

अन्योऽन्याभिभवे पट्वोरन्योऽन्यानभिभूतयोः।
सामानाधिकरण्यं यद् भावसन्धिः स भावयोः।।[६]

अलङ्कारसार में भाव सन्धि का उदाहरण दिया गया है।[७] यही उदाहरण काव्यप्रकाश में भी प्राप्त होता है।[८] बाध्य-बाधक भाव अथवा औदासीन्य होने पर कई भावों का मिश्रण भावशबलत्व कहलाता

---

१. रसदीर्घिका, पृ॰ ४९
२. अलङ्कारसार ४/७०, काव्यप्रकाश चतुर्थ उल्लास-श्लोक-५०
३. रसदीर्घिका, पृ॰ ४९
४. अलङ्कारसार ४/७१, काव्यप्रकाश चतुर्थोल्लास श्लोक-५१
५. भावयोर्युगपत्सन्धिः समावेशः प्रकीर्त्तितः। (रसदीर्घिका, पृ॰ ४९)
६. साहित्यसार, पृ॰ १४१
७. अलङ्कारसार ४/७२
८. काव्यप्रकाश, चतुर्थोल्लास, श्लोक-५२

है।[१] वास्तव में भावोदय तथा भावशान्ति की एकत्र स्थिति ही भावशबलता है। भावोदय तथा भावशान्ति में केवल एक-एक भाव की आस्वादपरता रहती है जबकि भावशबलता में कई भाव मिश्रितरूपेण उदित और शान्त होते रहते हैं। भावसन्धि में दो भावों का एक ही समय अस्वादन होता है और भाव शबलता में एक-एक भाव का पूर्व-पूर्वोपमर्दादि से अस्वादन किया जाता है।[२] पण्डितराज जगन्नाथ ने पूर्वोपमर्दत्व का निषेध किया है।[३] रसगङ्गाधर में कहा गया है कि जैसे नारिकेल, जल, दूध, मिश्री तथा कदली के मिश्रण से एक विलक्षण आस्वाद उत्पन्न होता है, उसी प्रकार भावों के मिश्रण से भी एक विलक्षण काव्यास्वाद प्रवाहित होने लगता है-

नारिकेलजलक्षीरसिताकदलमिश्रणे।
विलक्षणो यथास्वादो भावानां संहतौ तथा।।[४]

अलङ्कारसार में भावशबलता का यह उदाहरण प्रस्तुत किया गया है-

प्रब्रज्यैव शुभाय मे श्रुतिपथे जायेत तस्या वच-
श्चक्राग्रे मम कः स्मरस्त्रिजगती शून्या विना राधया।
निर्मुक्तैव मनस्त्रपा मृगदृशो लावण्यमन्यादृशम्।
धिग् जन्म क्व गतासि किं विलपितैः क्वासि प्रसन्ना भव।।[५]

उपर्युक्त इस पद्य में निर्वेद, औत्सुक्य, अमर्ष, भ्रम, मति, विषाद और दैन्य भावों का प्रतिपादन रूप मिश्रण प्रस्तुत किया गया है। अतः यहाँ भावशबलता स्वीकार की जा सकती है।

कभी-कभी ये भावादि, रस के मुख्य होने पर भी प्रधान हो जाते हैं।[६] इसका तात्पर्य यह है कि जब भावादि रस की अपेक्षा अत्यधिक चमत्काराधायक होते हैं तब इनकी प्रधानता कही जाती है। अन्यथा मुख्य रूपेण तो रस ही प्रधान है। विभावादि के द्वारा अभिव्यक्त स्थायिभावों के उद्रेक से रसास्वादन होता है, इसे रस ध्वनि कहते हैं। परन्तु जहाँ अनुभावों के द्वारा अभिव्यञ्जित व्यभिचारिभावों का उद्रेक होता है तो वहाँ भाव ध्वनि आस्वाद्य होती है। भृत्य के विवाह में राजा, भृत्य के पीछे-पीछे चलता है और उस स्थल पर उस वररूप भृत्य का प्राधान्य अभीष्ट होता है, राजा का नहीं, उसी प्रकार रस की अपेक्षा भाव ध्वनियों का प्राधान्य कभी-कभी हो जाता है[७] राजचूड़ामणि दीक्षित

---

१. भावशबलत्वं भावानां बाध्यबाधकभावमापन्नानामुदासीनानां वा व्यामिश्रणम्। (रसगङ्गाधर, पृ० १२६)

२. शबलता तु कालभेदेन निरन्तरया पूर्वपूर्वोपमर्दादिना। न च भावस्य शबलतायाः शान्त्युदयाभ्यामविशेषः। शान्तेरुदयस्य वा एकैकस्यास्वादे तद्भेदद्वयोपगमात्। (रसविलास, पृ० ५३)

३. रसगङ्गाधर, पृ० १२६

४. तदेव, पृ० १२७

५. अलङ्कारसार ४/७३

६. मुख्ये रसेऽपि तेऽङ्गित्वं प्राप्नुवन्ति कदाचन। (काव्यप्रकाश, चतुर्थोल्लास, पृ० १७८)

७. अलङ्कारसार, चतुर्थोल्लास, पृ० ३६